

**अकेश वि.** (तत्.) केशविहीन, केशरहित, बिना बालों का, कम बालों वाला।

**अकैतव पुं.** (तत्.) निश्छलता/निष्कपटता का भाव वि. कपट रहित, छल-हीन, निष्कपट, निश्छल।

**अकोटीकृत वि.** (तत्.) अश्रेणीबद्ध, श्रेणी विहीन।

**अकोट्य वि.** (तत्.) जिसकी श्रेणियाँ न बनाई जा सकें। जिसकी कोटि न बनाई जा सके।

**अकोप वि.** (तत्.) 1. कोपरहित होने का भाव, 2. प्रसन्नता, खुशी विलो. कोप।

**अकोरक पुं.** (तत्.) वन. किसी कारणवश किसी अंग का विकास रुक जाने पर उसका कोरक/कली के रूप में ही रह जाना।

**अकोरना स.क्रि.** (तद्.) 1. आलिंगन करना 2. (देशज) घी में भूनना (आलू, सूजी आदि को घी में अकोरना)।

**अकोला पुं.** (देश.) अंकोल नामक एक ऊँचा वृक्ष जो प्रायः जंगली पर्वतीय भूमि में होता है। इसकी जड़, फल, फूल, फल छाल और तेल औषधोपयोगी हैं।

**अकोविद वि.** (तत्.) जो कोविद या जानकार अर्थात् विज्ञ, विद्वान न हो, मूर्ख, अज्ञानी, अनाड़ी विलो. कोविद।

**अकोशिक वि.** (तत्.) जन्तु. (वह जीव) जिसका निर्माण कोशिकाओं से न हुआ हो, कोशिकाविहीन।

**अकौआ पुं.** (देश.) 1. आक, मदार, एक औषधीय क्षुप 2. राले के अंदर की घंटी।

**अकौटिन्य वि.** (तत्.) कुटिलता-हीनता, निष्कपटता, सीधापन, सहजता।

**अकौशल पुं.** (तत्.) कुशलता या दक्षता का अभाव, अदक्षता।

**अक्का स्त्री.** (तत्.) 1. माता/माँ/जननी पुं. (तुर्की.) > आका) स्वामी, प्रभु, मालिक।

**अक्कास वि.** (अर.) अक्स अर्थात् चित्र बनाने वाला चित्रकार, छायाकार, फोटोग्राफर।

**अक्कासी स्त्री.** (अर.) चित्रकारी, चित्रकला।

**अक्खड़ वि.** (तद्.) 1. अड़नेवाला 2. उग्र, झगड़ालू 3. निर्भय, निडर 4. किसी का कहना न मानने वाला।

**अक्खड़पन वि.** (तद्.) 1. अक्खड़ होने का भाव 2. अशिष्टता 3. लड़ाकूपन 4. उच्छृंखलता, उजड़ता, उद्धतपन।

**अक्त वि.** (तत्.) युक्त/जुड़ा हुआ बाहर तक फैला हुआ उदा. विषाक्त, रक्ताक्त।

**अक्ता स्त्री.** (तत्.) रात्रि।

**अक्तूबर पुं.** (अं.) ग्रेगोरियन कैलेंडर में सितंबर के बाद आने वाला महीना, ईसवी सन् का दसवाँ महीना, इस महीने में भारतीय कैलेंडर के आश्विन-कार्तिक महीने आते हैं।

**अक्रम वि.** (तत्.) क्रमरहित, बिना क्रम का, उल्टा-सीधा पुं. (तत्.) अव्यवस्था, गड़बड़ी, क्रमहीनता।

**अक्रम अतिशयोक्ति स्त्री.** (तत्.) अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण और कार्य के पूर्वापर संबंध के बिना दोनों के एक साथ होने का वर्णन किया जाता है, उदा. संधानेहु प्रभु विषिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला - मानस, सुदरकांड।

**अक्रम संन्यास वि.** (तत्.) आश्रम व्यवस्था से इतर लिया गया संन्यास/किसी आश्रम यथा वानप्रस्थ आदि में रहे बिना लिया गया संन्यास।

**अक्रमिक वि.** (तत्.) अव्यवस्थित, क्रम रहित, बेसिलसिला पुं. अव्यवस्था, क्रम का अभाव।

**अक्रांत वि.** (तत्.) 1. जिससे आगे कोई न जा पाया हो, अविजित 2. बैंगन का पौधा।

**अक्रांता स्त्री.** (तत्.) 1. कंटकारी 2. भटकटैया 3. बृहती नामक पौधा।

**अक्रिय वि.** (तत्.) 1. निष्क्रिय, जो कुछ न करे, निकम्मा 2. कर्मशून्य (ब्रह्म)।

**अक्रिया स्त्री.** (तत्.) 1. क्रिया हीनता, निष्क्रियता 2. कर्तव्य न करना 3. अनुचित कर्म, दुष्कर्म।